International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED), ISSN: 2320-8708
Vol. 2 Issue 2, March-April, 2014, pp: (69-74), Impact Factor: 1.267, Available online at: www.erpublications.com

# आजादी की दीवानी महिलाओं का भारतीय इतिहास मे योगदान

**मुकेश कुमार**

लेक्चरर (इतिहास), गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कसार, झज्जर

---

## परिचय

इतिहास में सभी के साथ एक जैसा न्याय नहीं होता। अधिकांश प्रसिद्ध इतिहासकार विशिष्ट व्यक्तियों की उपलब्धियों का वर्णन कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अनेक पुरुषों तथा महिलाओं ने अपने प्राणों तक का उत्सर्ग कर दिया था , पर हम केवल लोगों के नाम से ही परिचित हैं। अनेकों के तो नाम की भी जानकारी हमें नहीं है। जब बुद्धिजीवी वर्ग उनके बारे में कुछ नहीं जानता है , तो फिर सामान्य लोगों की जानकारी का तो सवाल ही पैदा नहीं होता।

कुछ ऐसी वीरांगनाएं भी हैं, जिन्हें हम आमतौर पर अपने अब तक के अध्ययन में किसी भी विषय के पाठ्यक्रम में नहीं पढ़ सके हैं और यह कार्य यदि शोध की दृष्टि से न किया गया होता तो शायद आज भी हम अनभिज्ञ होते। हम लोगों में कुछ इतिहासकारों को इसका ज्ञान अवश्य ही होगा क्योंकि जिनका ये शोध विषय रहा है - वे मनीषी ही इस दिशा में मुझे वहाँ तक पहुँचने में सहायक सिद्ध हुए।

इन भूले बिसरे क्रांतिकारियों के बारे में राष्ट्रीय अभिलेखागारों से जानकारी प्राप्त हुई है। इसके अतिरिक्त शोधकर्ता भी कुछ अज्ञात क्रांतिकारियों को प्रकाश में लाए हैं।

1857 की क्रांति में बाबू कुंवरसिंह ने अहम् भूमिका अदा की। इनके बार में आम आदमी जानता है। परंतु इस बात को बहुत कम लोग जानते है की दो महिलाओ रखैलों करमन बाई तथा धर्मन बाई ने बाबू साहब को क्रांति में भाग लेने हेतु प्रेरित किया था।

इसके अतिरिक्त ऐसी जानकारी मिली है कि बीबीगंज तथा पीरों की कुछ महिलाओं ने गुप्त रूप से क्रांति में भाग लिया था। 1857 की क्रांति में जगदीशपुर तथा दलेलपुर की कुछ महिलाओं ने कुँवर सिंह के भाई बाबू अमर सिंह (जो एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी थे ) को सहायता दी थी।

आशा रानी बोहरा ने अपनी पुस्तक “महिलाएँ और स्वराज्य” में कुछ ऐसी महिला क्रांतिकारियों का उल्लेख किया है, जो अभी तक इतिहास में अज्ञात थी। इनमें बदरी की ठकुराइन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त रानी दिगंबर कौर ने गोरखपुर में सैनिकों की मदद की थी। यही नहीं , रानी ने एक सेना संघठित की , जिसने क्रांतिकारियों को सहायता पहुँचाई थी।

जब 1857 में क्रांति प्रारंभ हुई, तो कानपुर में नाना साहब तथा तात्या टोपे ने क्रांति का नेतृत्व किया। उस समय हिंदू तथा मुस्लिम महिलाओं ने विविध रूप से क्रांतिकारियों को सहायता दी। उन्होंने गोला-बारूद इधर-उधर ले जाने , तोपचियों की मदद करने, दुर्ग के नीचे लड़ रहे क्रांतिकारियों को भोजन पहुँचाने , घायलों की सेवा-सुश्रूषा का कार्य कर युद्ध के समय क्रांतिकारियों को मदद पहुँचाई। आवश्यकता पड़ने पर वे शस्त्र धारण करके युद्ध के मैदान में भी जाती थीं।

रसलपुर गाँव की बेथी, छाजूनगर की लेखा, नांगली गाँव की रत्ना और परवल की रानी आदि महिलाओं ने क्रांति में सक्रिय रूप से भाग लिया था। अतः ब्रिटिश सरकार ने राजद्रोह के अपराध में उन्हें 16 जनवरी, 1858 ई. फाँसी पर लटका दिया।

1858 ई. में मैसूर के गोपाल दुर्ग की रक्षा करते हुए कुछ महिलाएँ वीरगति को प्राप्त हो गई। उनमें रायचूर की इला तथा दुर्गा, कुरलाहली गाँव की पोगरी आदि के नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय है।

मध्य भारत के निमाड़ क्षेत्र की क्रांति में मंजु तथा शाह देवी ने भाग लिया था , जिसके कारण उनको आजीवन कारावास की सजा दी गई।

उत्तर प्रदेश के जौनपुर की दो महिलाएँ महेरी तथा माही ने क्रांति में सक्रिय भूमिका निभाई थी। अतः ब्रिटिश सरकार ने उन्हें मृत्यु-दंड दिया।

नासिक में गंगा ने क्रांति का नेतृत्व किया था। अतः उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई और जेल में ही वह इस दुनिया से चल बसी।

मध्य भारत की धौली बावली की क्रांतिकारी महिला को जेल में डाल दिया गया और वहीं पर वह 28 फ़रवरी, 1859 को परलोक सिधार गई।

देवरिया की एक कृषक महिला देवी रानी को क्रांति में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण मृत्यु दंड की सजा दी गई थी। ऐसी भी जानकारी मिलती है कि मुजफ्फरनगर ज़िले की 255 महिलाओं को या तो ज़िंदा अग्नि में डाल कर जला दिया गया और गोली से उड़ा दिया गया।

समय समय पर भारतीय ललनाओं ने अपने आपको पुरुष की सहचरी सिद्ध कर दिया है। इस वजह से उन्हें भारतीय संस्कृति में अर्धांगिनी का दर्जा दिया गया है। ब्रितानियों ने मुजफ्फनगर के एक गाँव के बलपूर्वक लगान वसूल करने का प्रयास किया, तो पुरुषों के साथ-साथ वहाँ की स्त्रियों ने भी इसका विरोध किया। इस पर सरकार ने आशा देवी , भगवती, हबीबा, जमीला, मामकौर, इन्द्र कौर, राज कौर, रहीमी तथा शोभा देवी आदि महिलाओं पर राजद्रोह का अपराध लगाकर उन्हें फाँसी पर लटका दिया।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में असंख्य ऐसी महिलाओं ने भी भाग लिया था, जिनके बारे में हमें कोई जानकारी नहीं है। हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम उन अज्ञात वीरांगनाओं को भी प्रकाश में लाएं , जिन्होंने इस देश की आज़ादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था।

1857 के बाद रानी गिडालू ने उत्तरी कछार पहाड़ियों में नौ टैक्स अभियान छेड़ा। अंग्रेजी सरकार को चुनौती दी। बाद में अंग्रजों ने उन्हें कठोर कारावास की सजा दी। बीना दास ने बंगाल के गवर्नर सर स्टैनली जैक्सन की गोली मरकर हत्या करने की कोशिश की थी। इसके लिए बीना दास को 9 वर्ष की कठोर कारावास की सजा दी थी। प्रीतिलता वाडेदार द्वारा चटगांव शास्त्रागार पर हमला करने के दौरान सायनाइड कहकर शहीद होना और शांतिघोष तथा सुनीति चौधरी को आतंकवादी गतिविधियों के लिए आजीवन कारावास की सजा देना देश के नागरिकों के लिए प्रेरणादायक रहा। इस से बंगाल सहित पुरे देश में हलचल पैदा हो गयी।

International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED), ISSN: 2320-8708
Vol. 2 Issue 2, March-April, 2014, pp: (69-74), Impact Factor: 1.267, Available online at: www.erpublications.com

## रानी तपस्विनी

लक्ष्मी बाई की भतीजी तथा बेलुर के जमींदार नारायण राव की बेटी थीं। उनके बारे में बहुत कम लोगों को पता है। उन्होने 1857 के भारतीय स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम में जमकर अंग्रेजों से लड़ाई की थी।

क्रान्ति की विफलता के बाद उन्हें तिरुचिलापल्ली की जेल में रखा गया था। जेल से बाहर आने के बाद उन्होंने संस्कृत और योग की शिक्षा प्राप्त की और उसके बाद कोलकाता में महिलाओं की शिक्षा के लिए काम करती रहीं। उनका निधन 1907 में हुआ। रानी तपस्विनी का उल्लेख एक पाकिस्तानी लेखिका जहीदा हीना ने अपनी पुस्तक " पाकिस्तानी स्त्री : यातना और संघर्ष" में किया है। वे भारतीय उपमहाद्वीप में महिला शिक्षा पर अपने आलेख में उनका उल्लेख करती हैं।

रानी तपस्विनी ने बाल विधवा होने के बावजूद उन्होंने योगासन के साथ साथ शस्त्र चालन, घुड़सवारी का भी प्रशिक्षण लिया। पेशवा खानदान की होने के कारण ही उनको देशप्रेम विरासत में मिला था. अंग्रेजों को भारत से खदेड़ने की इच्छा ने उन्हें शस्त्र विद्या में निपुण बनाया।

अंग्रेजों को धोखा देने के लिए वे संत गौरीशंकर की शिष्या बन गयीं और शांति और प्रेम के भक्तों को आध्यात्मिक ज्ञान देने के साथ साथ देशभक्ति का उपदेश भी दिया करती थी । उन्होंने विद्रोह का प्रतीक लाल कमल दे कर क्रांतिकारी साधुओं का दल बनाया। इन लोगों ने अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति करने के लिए सोयी हुई भावनाओं को जगाने का कार्य सम्पन्न करना शुरू कर दिया । ये साधू दल अस्त्र शस्त्रों से पूरी तरह से लैस होते थे । युद्ध के समय तपस्विनी घोड़े पर सवार होकर मुठभेड़ों से जूझते हुए सारी व्यवस्था का निरीक्षण स्वयं ही देखती थीं । अंग्रेजों की योजनायें जब असफल होने लगीं तो अंग्रेज हाथ धोकर महारानी के पीछे पड़ गए । वह नाना साहेब के साथ नेपाल चली गयीं लेकिन वे वहाँ भी निष्क्रिय नहीं रहीं और वहाँ भी अंग्रेजों के खिलाफ देशप्रेम की भावना पैदा की और वहाँ पर 'महाकाली पाठशाला' खोल दी। वहीं से स्वतन्त्रता यज्ञ आरम्भ किया. जब तक जीवित रहीं क्रांति योजना की बार बार असफलता के बावजूद इसे जारी रखे रहीं । 1857 की क्रांति असफल होने के बाद भी क्रांति के ज्वाला जलाये रखने वाली महारानी तपस्विनी का नाम भारत की वीरांगनाओं में अग्रणी रहेगा।

## अजीज़न बाई

जैसा इस नाम से अनुमान लगाया जा सकता है कि ये नाम किसी नाचने वाली से सम्बन्ध रखता होगा । घुंघरुओं की झंकार से लेकर तलवार की खनक तक अजीज़न का जीवन इस प्रकार का रहा जो अपने आप में देशभक्ति और राष्ट्र की स्वतंत्रता का एक बहुत बड़ा पथ है।

जब कानपुर पर अंग्रेजों ने पुनः अधिकार कर लिया तो कानपुर की हिन्दू और मुस्लिम महिलायें अपने घरों से निकल कर गोला बारूद इधर से उधर ले जाने और सैनिकों को भोजन पहुँचाने एवं ओर भी कई प्रकार की सहायता का काम ठीक अंग्रेजी किले की दीवार के नीचे कर रहीं थीं । इन सब स्त्रियों में कानपुर की महान स्वतंत्रता सेनानी , कूटनीतिज्ञ एवं समर दक्ष अजीज़न ने वीर महिलाओं का एक दल संगठित किया और वीरांगनाओं की इस टुकड़ी का नेतृत्व किया । वीरांगना अजीज़न का यह संगठित दल मरदाने वेश में हाथ में तलवार लेकर घोड़े पर सवार होकर नगर में लोगों को क्रांति का सन्देश सुनाता हुआ घूमता था । युद्ध के समय यह दल अपने सिपहियों को दूध , फल, मेवा, मिठाई बांटता घायलों की सेवा करता था । समय पड़ने पर यह दल अपने साथियों को हथियार , गोला बारूद पहुंचता था । अजीज़न सैनिक वेशभूषा में तथा हाथ में पिस्तौल लिए अंग्रेजी सैनिकों को रौंदती चली जाती थी । उनके वीरत्व के कारण ही कानपुर कि महिलाओं में चेतना जाग्रत हुई।

नाना साहब की पराजय का समाचार पाते ही अजीज़न प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर मोहम्मद के होटल से 5 कातिल ले आई और बीबीघर के अंग्रेज कैदियों को मारकर कुँए में डलवा दिया । यह कुआं आज नाना राव पार्क में तात्या टोपे कि प्रतिमा के समक्ष वृत्ताकार चबूतरा बना हुआ है । अजीज़न इस कांड से शांत नहीं बैठी वरन उसने अंग्रेजी सेना से अपनी टुकड़ी और क्रांतिकारी सेना के साथ मिलकर छापामार युद्ध आरम्भ कर दिया।

एक बार हैरी और वाटसन नामक सैनिक इस लड़ाई में अपनी टुकड़ी से बिछुड़ कर पानी की खोज में जंगल में भटक गए थे और एक कुँए की ओर बढे, इधर अजीज़न भी इनकी ताक में पिस्तौल लिए पेड़ की आड़ में खड़ी थी । इन दोनों को बढ़ता देखकर उसने गोली चलाई परन्तु गोली चलते ही दोनों जमीं पर लेट गए और अजीज़न की गोलियां बेकार गयी । हैरी और वाटसन शस्त्रास्त्रों से लैस थे और उन्होंने इस सैनिक को पकड़ना चाहा । आदमी समझ कर धर दबोचा उससे अजीज़न की पिस्तौल दूर जा गिरी, सिर का साफा खुल गया और वह जमीं पर गिर पड़ी, तब वे समझे कि जिसे वे युवक समझ रहे थे वह तो वीरांगना नारी अजीज़न है । अजीज़न ने जमीं से उठने का प्रयास किया तो पुनः गिर पड़ी किन्तु पिस्तौल उनके हाथ में आ गयी । हैरी पानी पीने गया था । अजीज़न ने वाटसन के सीने में गोली उतार दी । हैरी जब तक कुछ समझे तब तक दूसरी गोली भी उसके सीने में उतार दी और वह परलोक सिधार गया।

## कुमारी मैना बाई

स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगनाओं में नाना साहब की अल्पवयस्क दत्तक पुत्री मैना को भी नहीं भुलाया जा सकता है । चिता में जिन्दा जल जाने के बावजूद उसने अपने साथियों के बारे में जानकारी देने से इंकार कर दिया और बिना चिल्लाये स्वतंत्रता की वेदी पर बलि चढ़ गयी ।

मैना शरणागतों को लेकर और एक अंगरक्षक माधव को लेकर गंगातट पर पहुँची , जहाँ उसे खबर मिली कि अंग्रेज कानपुर में महिलाओं की इज्जत से खिलवाड़ कर रहे हैं और दुधमुंहे बच्चों तक को नहीं बक्श रहे हैं । मैना का यह सुनकर खून खौल उठा, वह फिरंगियों से बदला लेने की सोचती ही रहती थी । उसको अपने पिता का ये आदेश कि 'शरणागतों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाना है.' याद आ गया । वह कर्त्तव्य से विमुख नहीं होना चाहती थी और वे फिरंगियों कि परवाह किये बिना अपने काम को अंजाम देने में लगी रही. इस बात की खबर अंग्रेजों को भी लग गयी और अंग्रेज भी वहाँ पंहुच गए । अंग्रेजों ने मैना के अंगरक्षक माधव को मारकर मैना को गिरफ्तार कर लिया । उनको मैना से स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जानकारी चाहिए थी । इसके लिए उसे पेड़ से बाँध कर भीषण यातनाएं दी गयीं. लेकिन मैना को देश के साथ जीने और मरने की शहादत याद थी और पिता की हिदायत भी । जब अंग्रेज इससे संतुष्ट न हुए तो उसको उन्होंने जिन्दा चिता में जलाया और अधजला शरीर निकाल कर फिर पूछताछ की लेकिन भारत माँ की उस पुत्री ने अपना मुँह नहीं खोला और उसको पूरा ही जला दिया गया।

मैना चिता में जल गयी लेकिन अंग्रेजों को ये सबक सिखा गयी कि भारतीय युवतियां भी किसी से पीछे नहीं है । भारत को इस बहादुर बेटी पर सदा गर्व रहेगा ।

## झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

भारतीय वसुंधरा को गौरवान्वित करने वाली झांसी की रानी वीरांगना लक्ष्मीबाई वास्तविक अर्थ में आदर्श वीरांगना थीं। सच्चा वीर कभी आपत्तियों से नहीं घबराता है। प्रलोभन उसे कर्तव्य पालन से विमुख नहीं कर सकते। उसका लक्ष्य उदार और उच्च होता है। उसका चरित्र अनुकरणीय होता है। अपने पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह सदैव आत्मविश्वासी, कर्तव्य परायण, स्वाभिमानी और धर्मनिष्ठ होता है। ऐसी ही थीं वीरांगना लक्ष्मीबाई।

महारानी लक्ष्मीबाई का जन्म काशी में 19 नवंबर 1835 को हुआ। इनके पिता मोरोपंत ताम्बे चिकनाजी अप्पा के आश्रित थे। इनकी माता का नाम भागीरथी बाई था। महारानी के पितामह बलवंत राव के बाजीराव पेशवा की सेना में सेनानायक होने के कारण मोरोपंत पर भी पेशवा की कृपा रहने लगी। लक्ष्मीबाई अपने बाल्यकाल में मनुबाई के नाम से जानी जाती थीं।

1842 ई. मे मनु का विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधर राव के साथ हो गया। अब मनु झाँसी की रानी बन गयी। 1853 ई. मे महाराजा गंगाधर राव की मृत्यु हो गयी जिससे रानी पर दुखों का पहाड टूट पडा। 16 मार्च, 1854 ई. को अंग्रेजो ने झाँसी को हडप लिया। 1857 मे क्रांति प्रारम्भ हुई। उस समय झाँसी के सैनिको मे भी ज्वाला भडक उठी थी। इस विद्रोह का नेतृत्व गुरुबख्स कर रहा था। अंग्रेजो को उनके सामने आत्मसमर्पन करना पडा। विद्रोहियों ने रानी को अपनी नेता मानकर दुर्ग उन्हे सौंप दिया।

इस युद्ध मे रानी ने वीरता की मिसाल पेश की उन्होनें अपनी सेवा मे स्त्रियों को जिम्मेदारी के पद सोपें। झांसी का शासन संभालते ही उन्होने पर्दा प्रथा को समाप्त किया। 1857 के आंदोलन को रोटी व कमल के प्रतिक के जरिये जन मानस से जोड़ा। लक्ष्मी बाई के समय मे प्रचलित दासी प्रथा के तहत जिन अब्राह्मण जाति की लड़कियों को दासी के रूप मे रखा जाता था। जिनको आजीवन कुंवारी रहना पड़ता था। रानी लक्ष्मी बाई ने दासी प्रथा को समाप्त करके उन्हे सखियों के मान्यता दी तथा उन्हे युद्ध कला सिखाई। स्त्रियों को सशक्त करने के लिए रानी लक्ष्मी बाई ने कहा स्त्रिया दृढता का कवच पहने तो ससार मे ऐसा पुरूष कोई हो नही सकता जो उनको **लूट** ले।

रानी के इस कथन को आधार बना कर आने वाले समय मे देश की महिलाओ ने आजादी की लड़ाई मे बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया जबकि महात्मा गांधी जैसे नेताओ ने स्त्रियो को घर के चुल्हे–चौके तक सीमित रहने की सलाह दी थी लेकिन देश की महिलाओ ने रानी के कथन को आधार मानकर पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आजादी की लड़ाई मे हिस्सा लिया।

## एनीबेसेंट

प्रख्यात समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी एनीबेसेंट ने भारत को एक सभ्यता के रूप में स्वीकार किया था तथा भारतीय राष्ट्रवाद को अंगीकार किया था। लंदन में एक अक्टूबर 1847 को जन्मी एनी बेसेंट पर अपने माता-पिता के धार्मिक विचारों का असर था। बाल्यावस्था में पिता का निधन हो गया। अल्पायु में उन्होंने फ्रांस और जर्मनी की यात्रा की और वहां की भाषाएं सीखी। युवावस्था में उनका परिचय युवा पादरी रेवरेंड फ्रैंक से हुआ और उनसे उनकी शादी हो गई, लेकिन यह शादी टिक नहीं पाई और दोनों में तलाक हो गया।

1878 ई. में उन्होंने पहली बार भारत के बारे में अपने विचार प्रकट किए। उनके विचारों ने भारतीयों के मन में उनके प्रति गहरा स्नेह उत्पन्न कर दिया। वे भारतीयों के बीच कार्य करने के लिए दिन-रात सोचने लगीं। सन् 1883 में वह समाजवादी विचारधारा के प्रति आकर्षित हुईं। उन्होंने लंदन में मजदूरों के पक्ष में सोशलिस्ट डिफेंस संगठन नामक संस्था बनाई।

वह 1913 से लेकर 1919 तक भारत के राजनीतिक जीवन की अग्रणी विभूतियों में एक थीं। ग्रोवर व यशपाल कहते हैं कि कांग्रेस ने उन्हें काफी महत्व दिया और उन्हें अपने एक अधिवेशन की अध्यक्ष भी निर्वाचित किया। उन्होंने बाल गंगाधर तिलक के साथ मिलकर 1916 में होमरूल लीग (स्वराज संघ) की स्थापना की और स्वराज के आदर्श को लोकप्रिय बनाने में जुट गई।

एनीबेसेंट ने निर्धनों की सेवा में आदर्श समाजवाद देखा। वह विधवा विवाह एवं अंतर-जातीय विवाह के पक्ष में थीं , लेकिन बहुविवाह को नारी गौरव का अपमान एवं समाज के लिए अभिशाप मानती थीं। वह 20 सितंबर, 1933 को इस दुनिया से चल बसीं।

## निष्कर्ष

इस लेख में लेखक ने भारत की उन वीरांगनाओं का वर्णन किया है जिन्होने भारत के इतिहास मे अनेकों उपलब्धियाँ हासिल की हैं। 1857 की क्रांति से लेकर भारत की आजादी तक भारतीय नारियों ने अनेको जुल्म सहे हैं और अपनी बहादुरी के अदम्य उदाहरण पेश किये हैं। बहुत सी बहादुर नारियां ऐसी हैं जिनका इतिहास मे कहीं भी वर्णन नहीं है और कुछ का सिर्फ नाम मात्र है।

भारतीय समाज मे महिलाओं को हमेशा ही कमजोर माना गया है लेकिन हम जब इतिहास के पन्नो को टटोल कर देखते हैं एक बात निकलकर सामने आती है कि महिलाऐं 1857 से लेकर आज तक जो भी राजनैतिक संगठन मे आई है उन्होने बड़ी सशक्त भूमिका निभाई है। 1857 की भारत की आजादी की लड़ाई मे महिलाओं ने अनेको जुल्म सहते हुए भी अपनी बहादुरी की अनेकों मिसालें पेश की है। यदि हम 1857 की लड़ाई की पुरोधा एक इकलोती महिला का जिक्र करें तो रानी लक्ष्मी बाई सबसे साहसी महिला थी। अगर इस लड़ाई का नेतृत्व रानी के हाथों मे होता तो भारत का इतिहास कुछ अलग होता। इसी तरह से देवरिया की कृषक महिला देवी रानी व उसकी टोली ने पुरूषो से भी आगे बढ़कर अंग्रेजी की लगान वसुलो का विरोध किया। रानी तपस्विनी ने स्वतंत्रता के युद्ध मे अपनी आहुती दे दी और उनका देश प्रेम किसी से छुपा नही है। नाचने वाली महिला अजीजन बाई जितना सुंदर वह नाचती थी उतना सुंदर वह तलवार चलाना भी जानती थी। उसने महिलाओं की विशेष टुकडी का नेतृत्व करते हुए अंग्रेजो के छक्के छुड़ा दिये थे। मैना बाई ने यातना सहने के बाद भी अपना मुहँ ना खोला व भारतीय युवतीयों को एक सीख दे दी गई। एनी बैसेन्ट ने जहा आजादी की लड़ाई मे भाग लिया वही समाज सुधारक का काम किया। ऐसा नही है कि केवल पुरूषों ने ही आजादी की लड़ाई को आगे बढ़ाया बल्कि महिलाओं के सहयोग के बिना यह जंग नही जीती जा सकती थी।

## संदर्भ सूची

[1]. जितेश नागोरी, कान्ता नागोरी, "भारत के स्वतंत्रता सेनानी", पृष्ठ 20-36, 89-113
[2]. एनीबेसेंट स्पीचेज एंड राइटिंग्स, पृष्ठ 70
[3]. विपिनचंद्र, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, पृष्ठ 1-8
[4]. डॉ के एम मालती, स्त्री विमर्श, भारतीय परीपेक्ष्य, पृष्ठ 36-37
[5]. दत्तात्रेय बलवंत पारसनी : रानी लक्ष्मीबाई चरित्र पृष्ठ 147-151
[6]. कमला दासगुप्ता 'इंटरव्यू' , पृष्ठ 8-9, 15-20
[7]. विमला फारूकी एवं रेणु चक्रवर्ती "कम्युनिस्ट एंड विमेन", पृष्ठ 33-34
[8]. कल्पना दत्ता : चटगांव आर्मरी रेडर्स : रेमनी सेंसेज , पृष्ठ 54-55
[9]. बी.एल. ग्रोवर एवं यशपाल : आधुनिक भारत का इतिहास , पृष्ठ 183-194
[10]. http://www.kranti1857.org/1857
[11]. http://agniveer.com/woman-hallmark-of-true-valor
[12]. http://hi.wikipedia.org/wiki
[13]. http://lucknowbloggersassociation.blogspot.in